



भारतीय संस्कृति के संरक्षण में अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की हिन्दी पत्रिकाओं की भूमिका

Dr. B. Laxmi Associate Professor

Head of The Department

Dr. V. S. Krishna Government Degree College (A) Visakhapatnam A.P.

Mail ID- buddhalaxmidec77@gmail.com

हिन्दी मात्र हमारे भारत देश की भाषा ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति-संप्रदाय और जीवन-मूल्यों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। विदेशों में बसे भारतीयों के लिए हिन्दी भाषा परंपरागत सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने का महत्वपूर्ण साधन है। विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता के ऐतिहासिक स्वरूप, उसके विकास और वैश्विक स्तर पर गंभीर अध्ययन अक्षुण्य अनुपम है। पत्रकारिता भाषा संरक्षण का माध्यम है। सांस्कृतिक विरासत की संवाहक है। सामाजिक संगठन का आधार है। राष्ट्रीय चेतना का वाहक है। लोकतांत्रिक संवाद का माध्यम है। विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता ने भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। समाचार-पत्रों में निम्न अंश प्रकाशित होते रहे, -रामायण, महाभारत, कबीर, तुलसीदास, प्रेमचंद, महात्मा गांधी, भारतीय पर्व और भारतीय संस्कार आदि। विदेशों में हिन्दी पत्रिका अनेक कठिनाइयों से जूझती है। जैसे- आर्थिक संकट, सीमित पाठक वर्ग, विज्ञापन की कमी, नई पीढ़ी का अंग्रेजी की ओर झुकाव, तकनीकी संसाधनों का अभाव हैं। आज ई-पेपर, वेब पोर्टल, सोशल मीडिया, ब्लॉग, यूट्यूब पत्रकारिता, पॉडकास्ट ने हिन्दी पत्रकारिता को विश्वव्यापी बना दिया है। पत्रकारिता भाषा को जीवित रखती है। प्रवासी समाज अपनी पहचान भाषा के माध्यम से बनाए रखता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका बहुजातीय और बहुभाषीय राष्ट्र है। भारतीय भाषाओं में हिन्दी, तेलुगु, तमिल, बंगला, गुजराती बोलने वालों की संख्या 8 लाख से ज्यादा है। 100 से अधिक कालेज, विश्वविद्यालयों और अनेक संस्थाओं में हिन्दी की पढाई प्रारंभ हुई है। नवंबर 1913 में 'गदर' अखबार के प्रथम संपादक लाला हरदयाल थे। न्यूजर्सी से बिहार एसोसिएशन आफ नार्थ अमेरिका से प्रकाशित होने वाली छमाही पत्रिका 'वैअल' है। आर्य प्रतिनिधि सभा की द्विभाषिक पत्रिका 'नवरंग टाइम्स' है। कवि अमरेंद्र कुमार की लघु पत्रिका 'क्षितिज' है। लुईजियाना के डा. सुभाष की हस्तलिखित पत्रिका 'पंचवटी' है। 26 जनवरी 1950 से विश्व सेवा आश्रम, न्यूयार्क द्वारा 'भारत समाचार' साप्ताहिक हिन्दी पत्रिका प्रारंभ हुई। सन 1984 में 'सीमांतिका' साहित्यिक पत्रिका में भारत के प्रमुख लेखकों, कवियों की रचनाएँ छपती थी। 1980 वर्जिनिया में भारत के प्रसिद्ध हिन्दी सेवी कुंवर चंद्र प्रकाश सिंह की प्रेरणा से अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति गठित हुई और 'विश्वा' पत्रिका की शुरुआत हुई। 35 वर्ष से प्रकाशित 'विश्वा' पत्रिका में एकात्मकता विशेषांक, नवगीत विशेषांक, गजल विशेषांक, अवधि विशेषांक, गणितीय विज्ञान जैसे लेखों की लोकप्रियता में प्रवासी भारतीयों का योगदान अविस्मरणीय है। श्री रामेश्वर अशांत ने विश्व हिन्दी समिति संस्था की स्थापना कर 'सौरभ' पत्रिका प्रारंभ किया। इसमें लेख, कहानी, कविता, आत्म मूल्यांकन जैसे विवेकानंद की दर्शन शताब्दी, डा. दाउजी गुप्त की हिन्दी भाषा की क्षमता पर थी। इसी तरह 2000 जुलाई-अगस्त अंक में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई एवं वीर सावरकर की तस्वीरें प्रथम



Cover Page



स्वतंत्रता संग्राम में पूर्णाहुति” और “उठो समस्त भारती” में स्वतंत्रता संग्राम एवं भारती संस्कृति पर लेख प्रकाशित हुई। आज भी समिति और पत्रिकाओं द्वारा भारतवंशियों को अपनी भाषा, संस्कृति एवं परंपराओं से जुड़े रखने का प्रयास जारी है। वर्ष 2000 में अमेरिका में “विश्व हिन्दी न्यास” की स्थापना हुई जिसका मुख्य लक्ष्य-विश्व में हिन्दी भाषा का बोध तथा शुद्ध हिन्दी का प्रयोग था। डा. राम चौधरी की टीम ने “हिन्दी जगत” त्रैमासिक पत्रिका का श्री गणेश किया जो कि 20 वर्षों से लगातार चल रहा है। इस पत्रिका में भारत के साथ मारिशस, फ़ीजी, अमेरिका के प्रतिष्ठित लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित होती रही।

न्यास ने विज्ञान जगत और बाल हिन्दी जगत पत्रिका प्रारंभ किया। ‘विश्व विवेक’ पत्रिका “हिन्दू एज्यूकेशनल एंड रिलीजियम सोसायटी आफ अमेरिका” की ओर से न्यू ओरलियन लुसियाना से प्रकाशित हुआ, जिसमें भारत-अमेरिका के हिन्दी लेखकों ने साहित्य एवं संस्कृति के साथ-साथ भारत और भारतवंशियों के मामलों पर भी लेख प्रकाशित कर रही है। इस पत्रिका में महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष लेख और साथ ही धर्म, चर्चा, फ़िल्म समीक्षा, चौबारा जैसे रुचिपूर्ण लेख भी प्रकाशित हुए हैं। ‘नमस्ते यू.एस.ए.’ और ‘हिन्दू टाइम्स’ दो साप्ताहिक पत्रिकाएँ भारत के साथ यू.एस.ए., पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, ईराक, यूके, काबुल में प्रकाशित हो रहा है। इसमें हिन्दू टैपल एंड क्यूनिटी सेंटर और पर्वत की बेटी धारावाहिक रूप में लोकप्रिय हुई। हिन्दी एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु 1983 में अमेरिकन समाचार पत्रिका का प्रकाशन हुआ जिसमें तकनीक, चिकित्सा, फ़िल्म, भारत-अमेरिकन कला और वाणिज्य संबंध पर विशेष लेख प्रकाशित होते हैं।

2003 से प्रकाशित होने वाली स्पैन पत्रिका हिन्दी और उर्दू भाषा में लिखी जाती थी। इसमें भारत और अमेरिका दोनों देशों के लेखकों का शिक्षा, व्यवसाय, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, संस्कृति, कला और सामाजिक विकास जैसे विषय पर अनेक विचार प्रकाशित होते थे। हिन्दी यू. एस. ए. संस्था द्वारा भारतीय संस्कृति के लिए कार्यरत 22 हिन्दी पाठशालाओं के संचालन में 2001 से ‘कर्मभूमि’ नाम से अर्धवार्षिक एवं वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। इन 12 वर्षों में इस पत्रिका की, 20 से अधिक अंक प्रकाशित हुए हैं। ‘यादे’ हिन्दी पत्रिका 2012 में श्रीमती अनिता कपूर ने प्रारंभ किया, आनलाईन की द्विमासिक पत्रिका ‘सेतु’ 2016 से वेब माध्यम से जारी हो रही है। विश्वभर के अप्रवासी और स्थानीय साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, कथा-कहानीकार, लघुकथा, काव्य, अनुवाद, समीक्षा, व्यंग्य, साक्षात्कार जैसे अंशों पर लेखन जारी है। 1999 से 2005 तक अनेक स्तंभों पर लेख उद्धृत किये गये हैं। पत्रिका में, हिन्दी कौस्तुभ 2021 से 2022 तक प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका में संपादकीय के साथ-साथ हिन्दी पाठशाला, हमारी संस्कृति, शब्द पहेली, इतिहास के पन्नों से और इसके अलावा बच्चों की कलम, लघुकथा शीर्षक से रचनाएँ प्रकाशित हुई। ‘अनन्य’ आनलाईन पत्रिका आज अमेरिका के अलावा आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, चीन, रूस, सिंगापुर, तंजानिया, केन्या, न्यूजीलैंड और कैनेडा से जारी है। इसी तरह ई-कल्पना आनलाईन का प्रकाशन नियमित रूप से हो रहा है। हिन्दी रेडियो एवं टी.वी. चैनल से हिन्दी में गीत-संगीत, खबरे, परिचर्या प्रसारित होती है।



उत्तरी अमेरिका में कनाडा एक विशाल देश है। जिसमें बैकुंर शहर 1907 में “बैकुंर खालसा दिवान सभा” की स्थापना हुई। जिसमें ‘आजाद भारत’ समाचार पत्र 1975 में ‘भारती’ मासिक पत्रिका का प्रकाशन, श्री त्रिलोचन सिंह गिल 1918 में और 1982 से हिन्दी में ‘जीवन ज्योति’ टोरंटो से किया गया। 1983 में हिन्दी लिटरेरी सोसायटी आफ इंडिया की स्थापना की गई। 1985 में ‘हिन्दी संवाद’ पत्रिका 1990 में ‘संगम’ नामक पाक्षिक पत्र और इसी बीच “भजनमाला” का प्रसारण रेडियो स्टेशन से हुआ। ओटावा से ‘अंकुर’ त्रैमासिक पत्रिका 1980 से 1994 तक रहा, जिसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति, समाज एवं साहित्य को विदेश की धरती पर प्राणवंत रखना था। 1998 में हिन्दी प्रचारिणी सभा कनाडा के टोरंटो से हिन्दी ‘चेतना’ पत्रिका प्रारंभ हुआ इस पत्रिका ने विश्व में हिन्दी साहित्य को मंच प्रदान किया। जिसमें अमरीका, चीन, ब्रिटेन, भारत, नार्वे, फ्रांस, मारीशस नीदरलैंड, यू. ए. इ. के रचनाकार विश्व के असंख्य हिन्दी प्रेमी पाठकों से जुड़े हैं। यह पत्रिका वसुधैव कुटुंबकम् के सिद्धांतों में पूरी आस्था रखती है। कनाडा के मुख्य चैनलों पर हिन्दी चेतना के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। 2016 से इस पत्रिका का डिजिटल संस्करण भी शुरू हो गया है। डा. स्नेह ठाकुर के संपादन में “वसुधा” पत्रिका 16 वर्ष तक विदेश की धरती में स्वदेश की साहित्य के वर्चस्व को बढ़ावा दिया। श्री सरन घई के संपादकत्व में 1999 से 2010 तक पाक्षिक पत्रिका “नमस्ते कनाडा” बाद में “हिन्दी टाइम्स” नाम से मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होने लगा। अब यह ई-पत्रिका के रूप में एवं इसका आडियो रूप भी उपलब्ध है। कनाडा से दो साप्ताहिक समाचार पत्र हिन्दी एब्राड और हिन्दूस्तान टाइम्स आज भी प्रति सप्ताह प्रकाशित हो रहा है। ‘उद्गार’ पत्रिका में एक विशेष परिशिष्ट ‘विश्वा’ नाम से जोड़ा जाता था। जिसमें कनाडा के रचनाकारों की रचनाएँ होती थी। डा. जाइदलाल पोर्टमूडी द्विमासिक हिन्दी अंग्रेजी की पत्रिका “सहपरा” और श्री दुष्यंत सारस्वत के संपादकत्व में मासिक पत्र “सरस्वती” 2004 से चल रहा है। कनाडा से हिन्दी की आनलाइन पत्रिका में साहित्य कुंज की गरिमा 15 वर्ष से अक्षुण्य है। इस ई-पत्रिका के संपादक सुमनकुमार घई हैं। पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल 2019 से डा. रत्नाकर नराले द्वारा संपादित है। इसमें हिन्दी, संस्कृत, भारतीय कला संस्कृति पर आलेख प्रकाशित हैं। विश्व हिन्दी संस्थान कनाडा द्वारा “प्रयास” ई-पत्रिका के संपादक श्री सरन घई हैं, साथ ही कनाडा में अनेक रेडियो स्टेशन का हिन्दी में प्रसारण हो रहा है जिसमें कुछ इस प्रकार हैं - एफ.एम.91.5, बालिविब्स रेडियो, रेडियो हमसफर, 22 जी नेट, रेडियो दिल से, झंकार, रेडियो एम फ़ोर यू रेडियो और ए.टी. एन. का टी.वी. चैनल श्री चंद्रशेखर द्वारा संचालित हैं।

आस्ट्रेलिया का लैटिन अर्थ-दक्षिणी है। सिडनी आस्ट्रेलिया से प्रो.चंद्र मोहन श्रीवास्तव और डा. शैलजा चंद्रा ने “चेतना” पत्रिका का संपादन किया। सिडनी में इस पत्रिका के कारण हिन्दी समाज में चेतना जागृत हुई भारतीय कलाकारों में नाना पाटेकर, शबाना आज़मी, सिद्धार्थ, गीतकार नीरज, कवि सरोजकुमार को विशेष रूप से आमंत्रित करके कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रीमती शैलजा ने चेतना में अपनी संपादकीय में इस प्रकार लिखा है - “भविष्य की पीढ़ियों को हम अंग्रेजी वाली हिन्दी नहीं, भारतीय हिन्दी की शिक्षा दें, जिससे उनके हृदय में स्वाभिमान व गर्व जागृत हो। हिन्दी भाषा की गूढ़ता व क्षमता के आनंद से हमारी आगामी पीढ़ी वंचित न रहे...” (विदेश में हिन्दी पत्रकारिता-पृष्ठ 127)



Cover Page



आस्ट्रेलिया के विकटोरिया से निकेतन संस्था द्वारा 1991 में हिन्दी भाषा के पठन-पाठन और हिन्दी संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए 1992 में “देवनागरी” पत्रिका प्रारंभ हुआ। पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर दिवाली के अवसर पर बनाई जाने वाली कुमाऊनी चित्रकारी आदि दृश्यमान है। हिन्दी निकेतन संस्था के विकास में श्री दिनेश श्रीवास्तव का विशेष योगदान है। पंडित परसराम के संपादन में आस्ट्रेलिया का प्रथम मासिक समाचार-पत्र ‘हिन्दी समाचार’ पत्रिका प्रारंभ हुआ, जिसका उद्देश्य-भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा को पुष्पित-पल्लवित करना था। विदेश की धरती में दस हजार पत्रिका मुद्रित हुई क्योंकि इसमें भारतीय संस्कृति, त्यौहार, बालीवुड के समाचार, राशिफल आदि मुद्रित होते थे। 1999 में ये प्रतियाँ 20 हजार और 2004 में 30 हजार हो गईं। श्री दिनेश श्रीवास्तव की पत्रिका ‘हिन्दी पुष्प’ द्वारा अनवरत प्रयोजनपूर्ण प्रकाशन ने आस्ट्रेलिया समाज में हिन्दी को लोकप्रिय बना दिया। 1994 से “संदेश न्यूजलेटर” आस्ट्रेलियन हिन्दी इंडियन एसोसिएशन की ओर से प्रकाशित पत्रिका है। इंडियन मीडिया ग्रुप द्वारा हिन्दी-अंग्रेजी द्विभाषी समाचार-पत्र ‘हिन्दी एक्सप्रेस’ पत्रिका में विश्व दर्शन कालम में भारत और विश्व की राजनैतिक तथा रोचक खबरें प्रकाशित हुईं। श्री बंकिमचंद्र चटोपाध्याय की रचना-आनंदमठ का शृंखलावार प्रकाशन हुआ। समाज स्तंभ में हरियाणा के खाप पंचायतों की दादागिरी प्रकाशित हुई। काव्य-क्यारी में कविताएँ एवं साथ ही कलाश्री, व्यंग्य, खेल-कूद, फिल्मी हलचल, नारी-जगत, बालमेकर स्तंभ चर्चित है। 2010 से 2014 तक ‘हिन्दी गौरव’ पत्रिका मुद्रित रूप में 2014 से आनलाईन में निकाला जा रहा है। 1996 से वार्षिक हिन्दी पत्रिका “भारत-भारती” में हिन्दी समाज द्वारा हिन्दी एवं भारतीय भाषा का प्रचार करना है। 2021 में रजतजयंती विशेषांक प्रकाशित हुआ। आस्ट्रेलियांचल त्रैमासिक ई-पत्रिका डा. भावना कुंवर के संपादन में हुआ। वेब साइट - www.australianchal.com है।

आस्ट्रेलिया में अनेक कम्यूनिटी रेडियो चैनल है। एस. बी. एस., टी. वी., रेडियो चैनल और राष्ट्रीय चैनल है। न्यूजीलैंड में भारतीयों का आगमन 1769 से माना जाता है। ‘आर्योदय’ का प्रकाशन 1921 में गुजराती भाषा में हुआ। 1935 में श्री प्रभु पटेल के संपादकत्व में “उदय” 1992 में हस्तलिखित हिन्दी पत्रिका श्री रोहित कुमार हैप्पी ने “द इंडियन टाइम्स” में प्रारंभ किया। न्यूजीलैंड में हिन्दी पढ़ने वाले काफी हैं परंतु भारतीय संस्कृति, भाषा और साहित्य का प्रचार-प्रसार असाधारण चुनौती है। 1996 से निकलने वाली “भारत दर्शन” पत्रिका निःशुल्क थी - पत्रिका के अंतिम अंक में बड़े शब्दों में विशेष अनुरोध इस प्रकार है - “कृपया इस पत्रिका को पढ़ने के बद फैंके नहीं, बल्कि किसी और हिन्दी प्रेमी को पढ़ने को दे दें। पत्रिका के प्रचार-प्रसार में आपके योगदान के लिए आभार।” (विदेश में हिन्दी पत्रकारिता - पृष्ठ 138)

सन 1996-97 में विश्व की प्रथम द्विमासिक निःशुल्क ई-पत्रिका ‘भारत दर्शन’ जिसके संपादक और प्रकाशक रोहित कुमार ने अपनी तकनीकी योग्यता के कारण विश्वस्तर पर मान्यता प्रदान की और आज भी निरंतर प्रकाशित हो रही है। जिसमें काव्य, बाल-साहित्य, कथा-साहित्य, विविध आलेख, भारतीय व्रत, त्यौहार, मेला आदि हैं। इस पत्रिका के डोमेन पर लेखक संग्रह, साहित्य संग्रह, बाल साहित्य, दैनिक कहानियाँ, हिन्दी साहित्य की खबरें, अपना लेख जमा करे, त्यौहार संग्रह, मिथक संग्रह, ब्लाग, वीडियो गैलरी, अतिथि पुस्तिका समाचार बोर्ड आदि गागर में सागर भरने वाली विशेष पत्रिका है। इस तरह ‘भारत दर्शन’ जैसी देदिप्यमान पत्रिका नक्षत्र के रूप निरंतर साहित्य जगत को आलोकित कर रहा है।



Cover Page



अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की हिन्दी पत्रिकाएँ प्रवासी भारतीयों के लिए केवल समाचार और साहित्य का माध्यम नहीं हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति की संवाहक और सांस्कृतिक स्मृति की संरक्षक भी हैं। इनके माध्यम से हिन्दी भाषा जीवित रहती है, भारतीय साहित्य का प्रसार होता है और नई पीढ़ी अपनी जड़ों से परिचित होती है। साथ ही, ये पत्रिकाएँ प्रवासी अनुभवों को हिन्दी साहित्य में स्थान देकर भारतीय संस्कृति को वैश्विक संदर्भ प्रदान करती हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और वैश्विक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

संदर्भ सूची -

1. जवाहर कर्णावत - विदेश में हिन्दी पत्रकारिता
2. डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र - हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास
3. डॉ. रामविलास शर्मा - भाषा और समाज
4. विभिन्न प्रवासी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं एवं शोध-पत्रों से संबंधित